हिन्दुस्तान
कानपुर • शनिवार • 06 जून 2020 06

18 फीसदी कम वन क्षेत्र से तेजी से हो रहा जलवायु परिवर्तन

सीएसए

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

कई सालों से जलवायु में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। इसके पीछे मुख्य कारण पेड़ों की कटान और वन क्षेत्र का कम होना है। प्रदेश में सिर्फ 6.8 फीसदी ही वन क्षेत्र बचा है। जबकि सामान्य रूप से 25 से 30 फीसदी वन क्षेत्र होना चाहिए। ऐसे में जलवायु परिवर्तन तेजी से हो रहा है। यह बात प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कही। वहीं, मुख्य अतिथि कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि कृषि को तो सक्षम बनाने में काफी हद तक कामयाब हुए हैं लेकिन वानिकी जो मानव सभ्यता की आधार थी, उस ओर कोई ठोस कदम नहीं उठाया है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) की ओर से शुक्रवार को एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार का विषय जलवायु परिवर्तन एवं वानिकी प्रभाव, निहितार्थ व रणनीतियां रही। कार्यक्रम की। तकनीकी सत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक सूर्यनारायण भास्कर ने उद्घाटन किया। रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विवि झांसी के वानिकी विभाग के अधिष्ठाता डॉ. एके पांडे ने संरक्षित खेती और पोषकीय सुरक्षा के लिए शस्य वानिकी विषय पर जानकारी दी। कहा कि आधुनिक युग में कृषि वानिकी से सामान्य किसान संतुलन लाभ उठा सकते हैं। कृषि वानिकी से न केवल खेती योग्य भूमि व जंगलों पर बढ़ती हुई जनसंख्या का दबाव कम किया जा सकता है। इससे पर्यावरण प्रदूषण को भी काफी हद तक कम किया जा सकता है। विवि के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने जलवायु परिवर्तन के बीच नई-नई प्रजातियों के बारे में जानकारी दी। वेबिनार में डॉ. आरके तिवारी, डॉ. एके पांडेय ने भी जानकारी दी। इस मौके पर कार्यक्रम सचिव डॉ. मनीष गंगवार, डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. धूम सिंह, डॉ. आनंद स्वरूप आदि रहे।

वेबिनार में राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और सूबे के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही आदि।

कानपुर, 6 जून 2020 दैनिक जागरण 7

जैव विविधता जितनी समृद्ध उतना संतुलित होगा वातावरण : आनंदीबेन

राष्ट्रीय वेबिनार में बोलीं राज्यपाल, जानवरों के प्रति संवेदनशीलता बरतें

जागरण संवाददाता, कानपुर : प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए हमें जल, जंगल, जमीन और जानवरों के प्रति संवेदनशीलता बरतनी होगी। आज पर्यावरण की समस्या पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय है, जिससे न सिर्फ मनुष्य प्रभावित है, बल्कि जीव-जंतु, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जंगलों, नदियों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है। जैव विविधता जितनी समृद्ध होगी उतना ही संतुलित वातावरण होगा। यह बात राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कही।

वे शुक्रवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता कर रहीं थी। वेबिनार का विषय 'जलवायु परिवर्तन एवं वानिकी प्रभाव, निहितार्थ एवं रणनीतियां' था। उन्होंने कहा कि अनियोजित विकास और मनुष्य की लालची प्रवृत्ति ने जिस प्रकार प्रकृति का दोहन किया है, उसी का नतीजा कोरोना महामारी के रूप में विश्व के सामने है। प्रदेश में वन क्षेत्र 25 से 30 फीसद होना चाहिए, लेकिन 6.8 फीसद ही बचा है। लॉकडाउन के दौरान नदियों के जल एवं वायुमंडल में आश्चर्यजनक परिवर्तन देखने को मिला। वेबिनार के मुख्य अतिथि कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन न किया जाए। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने विश्वविद्यालय की ओर से विकसित की गई गेहूं की प्रजाति हलना और के-1317 की जानकारी दी।

भविष्य में हो सकती खाद्यान्न की समस्या : तकनीकी सत्र में रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय झांसी के वानिकी विभाग के अधिष्ठाता डॉ. एके पांडेय ने संरक्षित खेती और शस्य वानिकी पर जानकारी दी। यही स्थिति बनी रही तो भविष्य में खाद्यान्न की समस्या हो सकती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. सूर्यनारायण भास्कर, केंद्रीय वानिकी अनुसंधान संस्थान झांसी के डॉ. आरके तिवारी, वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के डॉ. एके पांडेय समेत अन्य विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए।

राष्ट्रीय वेबिनार को संबोधित करती राज्यपाल आनंदीबेन पटेल • सूचना विभाग

National Webinar on Climate change and Agro-forestry impact implication & strategies held on June 05, 2020